

संशोधन प्रश्न  
क्या है, सिद्ध

शिक्षक का नाम	विषय	वर्ग	शैक्षणिक उपनिष्ठा
Dr. K. S. J.	मनोविज्ञान (Psychology)	UG Sem - I Core	व्यक्तिगत और सामाजिक प्रक्रिया (Nature & process of Learning)

Dr. K. S. J.  
23/5/2020

# सीखने का स्वरूप एवं प्रक्रिया

## (NATURE & PROCESS OF LEARNING)

व्यक्ति अपने जीवन के प्रारम्भ में ही सीखना आरम्भ कर देता है और जीवनपर्यन्त सीखता ही रहता है। बालक शैशवावस्था के आरम्भ से बिल्कुल असहाय होता है। उसका जीवन दूसरों पर निर्भर रहता है, किन्तु वह धीरे-धीरे अपने को वातावरण के अनुकूल व्यवस्थापित करने का प्रयत्न करता है। उसके सीखने की प्रक्रिया में दो मुख्य तत्त्व निहित होते हैं जो उसे वातावरण के अनुकूल व्यवस्थित करने में सहायता पहुँचाते हैं—(i) परिपक्वता, (ii) अनुभूति से लाभ उठाने की योग्यता। बालक की परिपक्वता, उराकी अभिवृद्धि और विकास के, जो उसकी उम्र के बढ़ने के साथ-साथ होता जाता है, इस सम्बन्ध में हम पिछले अध्याय में चर्चा कर चुके हैं। इस स्थान पर हम 'अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता' पर प्रकाश डालेंगे तथा परिपक्वता और प्रौढ़ता की भी, जहाँ आवश्यक होगा, साथ-साथ चर्चा करेंगे।

प्रत्येक प्राणी कुछ ऐसे जन्मजात उपस्करण को लेकर उत्पन्न होता है, जो उसकी प्रारम्भिक प्रतिक्रियाओं की दिशा निर्धारित करते हैं। प्राणी इन्हीं उपस्करणों के आधार पर अपने को सरल वातावरण के अनुकूल व्यवस्थित करता है जो जन्म के समय चारों तरफ मिलता है, किन्तु मानव तो जटिल परिस्थितियों में रहता है, अतः उसके व्यवहार को दिशा देने वाले ये जन्मजात उपस्करण अपूर्ण सिद्ध होते हैं। उसे अपने प्रतिक्रियाओं एवं व्यवहार को अधिक व्यापक और वातावरण के उपयुक्त बनाने के लिए जीवन के अनुभवों से लाभ उठाना पड़ता है। उसे कुछ सीखना पड़ता है। इस अर्थ में हम 'सीखने' की परिभाषा इस प्रकार देंगे—

.....उपयुक्त प्रतिक्रिया को अपनाने की प्रक्रिया ही 'सीखना' है।<sup>1</sup>

सीखने से तात्पर्य है, 'संचयी उन्नति'<sup>2</sup>। उन्नति के स्वरूप का आकलन उन परिवर्तनों द्वारा किया जा सकता है जो उस समय होते हैं जबकि सीखने की क्रिया हो रही होती है। जीवन के प्रारम्भ में बालक में सीखने की प्रक्रिया का स्वरूप अपरिष्कृत, रुक्ष एवं समन्वेषी होता है। उस समय बालक के कार्य-व्यापारों में विभिन्नता दृष्टिगोचर नहीं होती तथा उसकी प्रतिक्रियाएँ प्रायः दोषपूर्ण होती हैं। उचित शिक्षा के द्वारा वह कम त्रुटियाँ करना सीख लेता है, वह अपने कार्यों में एकरूपता लाता है और निर्णय करने की क्षमता का विकास करता है। बालक के लिए शिक्षा प्रकार, सीखने की दिशा एवं तत्सम्बन्धी पाठ्यक्रम बालक की अभिवृद्धि और विकास की अवस्थाओं पर निर्भर होता है। बालक की उम्र में जैसे-जैसे वृद्धि होती है, उसके विचारों में अनिश्चितता और अस्थिरता कम होती है। वह अपने उन कार्यों को सरलतापूर्वक करने लगता है जिन कार्यों को वह प्रथम अवस्था में अत्यन्त कठिनाई एवं घबराहट के साथ करता था।

व्यक्ति की उन्नति से हमारा तात्पर्य अनुभव के द्वारा लाभान्वित होना है। किन्तु सीखने का अर्थ एक यान्त्रिक विधि से अभ्यास के द्वारा तथ्यों एवं निपुणता को प्राप्त करना मात्र नहीं है वरन् सीखने

में जिज्ञासु को साधन, वस्तुओं का नियोजन और मूल्यांकन भी करना पड़ता है तथा उनकी कई प्रकार के अर्थों में व्याख्या भी करनी पड़ती है और वह चेतन रूप से वांछित उद्देश्य प्राप्त करने की चेष्टा करने लगता है। हमें सीखने की परिभाषा पर पूर्णरूप से विचार कर लेना चाहिए।

### सीखने की परिभाषा

सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अपने कार्यों पर निर्भर रहती है, जबकि मानसिक अभिवृद्धि तथा प्रौढ़ता विकास की प्रक्रियाएँ हैं, जिनके सम्बन्ध में व्यक्ति बहुत कम कुछ कर सकता है।

गेट्स के अनुसार, 'अनुभव द्वारा व्यवहार में रूपान्तर लाना ही सीखना है।'<sup>1</sup>

व्यक्ति को क्या सीखना है, इसका निश्चय उसके शारीरिक स्वास्थ्य एवं परिस्थितियों की माँग पर आधारित होता है। मनुष्य पर वातावरण का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। वह अपने चारों तरफ की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना बच नहीं सकता है। वह स्वभाव से आनम्य प्रवृत्ति वाला होता है, उसकी प्रतिक्रिया की कुछ निश्चित पितृगत विधियाँ होती हैं। 'उसकी रुचि, रुझान, निपुणता, योग्यता एवं श्लाघा शक्ति—सभी सीखने की क्रिया की ही उपज हैं।'

पील महोदय के अनुसार, 'सीखना व्यक्ति में एक परिवर्तन है जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण में होता है।'<sup>2</sup>

किन्तु वह कहते हैं कि प्रत्येक वातावरण में परिवर्तन 'सीखना' नहीं। यदि एक व्यक्ति मोटर दुर्घटना से संज्ञाहीन हो जाता है तो यह सीखना नहीं है।

पील महोदय सीखने की प्रक्रिया का संक्षेपीकरण निम्न प्रकार से करते हैं :

(1) सीखना सहज क्रियात्मक नहीं है। इससे तात्पर्य है कि पलक का झपकना या टखने पर चोट लगने पर उसे पीछे हटाना सीखना नहीं है। ये क्रियाएँ शारीरिक क्रियाएँ हैं जो व्यक्ति स्वाभाविक रूप से करता है।

(2) सीखना चेतन उद्देश्य से हो सकता है अथवा वह सामाजिक और जैविक अनुकूलन के लिए हो सकता है।

(3) सीखने के द्वारा व्यक्ति में स्थायी तथा अस्थायी परिवर्तन आते हैं।

(4) यह अनुकूलित हो सकता है। तात्पर्य यह कि समाज स्वीकृत व्यक्ति बना सकता है अथवा प्रतिकूलित हो सकता है जो असामाजिक व्यवहार को जन्म दे सकता है। इस सम्बन्ध में हम 'मानसिक स्वास्थ्य' वाले अध्याय में विस्तार से वर्णन करेंगे।

(5) सीखना सही हो सकता है या त्रुटिपूर्ण।

क्योंकि किसी भी विज्ञान में जो विभिन्न मत होते हैं, वे बहुत कुछ परिभाषा के सम्बन्ध में ही होते हैं। हम यहाँ अब इस ओर ध्यान देंगे कि सीखने की परिभाषा के सम्बन्ध में विभिन्न सिद्धान्तों के प्रतिपादक अपने विशिष्ट मत पर कैसे पहुँचते हैं।

बेरलसोन तथा स्टीनेर महोदय<sup>3</sup> सीखने की परिभाषा ऐसे व्यवहार परिवर्तनों के रूप में देते हैं जो कि उसी प्रकार की स्थितियों में पूर्व व्यवहार के परिणामस्वरूप होता है, न कि ऐसे परिवर्तन जो इस प्रकार के शारीरिक परिवर्तनों के कारण होते हैं; जैसे—अभिवृद्धि, मूख, थकावट, निद्रा इत्यादि। आमतौर पर व्यवहार अभ्यास के पश्चात् पहले की अपेक्षा अधिक कुशल हो जाता है। परिणामस्वरूप सीखना या तो प्रत्यक्ष या सांकेतिक रूप से अनुभवों के प्रभावों को जो अनुवर्ती व्यवहार पर होते हैं

उनको दर्शाता है, किन्तु ये ही लेखक अपनी परिभाषा को किसी एक विशेष प्रकार के व्यवहार से सीमाबद्ध नहीं करते हैं; उदाहरण के लिए, वे कहते हैं कि उसकी परिभाषा सीखने के प्रकार के एक विस्तृत क्षेत्र को सम्मानित करती है, जिनमें अनुबन्धित प्रतिक्रियाओं का बनना; जैसे—घण्टी की आवाज पर लार टपकना<sup>1</sup>, कौशल का अर्जन; जैसे—लिखना, टाइप करना इत्यादि; स्मरण करना, अर्जित सामग्री का धारण रखना अथवा जटिल समस्याओं का यकायक हल सब शामिल है।

ट्रेवर्स<sup>2</sup> सीखने की परिभाषा में कठिनाइयों का विश्लेषण करते हैं और एक विस्तृत रूप से प्रयोग होने वाली परिभाषा की खोज करते हैं। वह अलपोर्ट<sup>3</sup> महोदय के इस कथन से अपना विचार प्रकट करना आरम्भ करते हैं कि सीखने के सिद्धान्त और अन्य सब मनोविज्ञान की चीजों की भाँति अन्वेषणकर्ता की अपनी मानव प्रकृति की अवधारणा पर निर्भर होते हैं। इस प्रकार सीखने की भी कोई सामान्य रूप से स्वीकृति परिभाषा नहीं हो सकती; क्योंकि मानव की प्रकृति का कोई आमतौर से स्वीकृति दृष्टिकोण नहीं है।

ट्रेवर्स मानते हैं कि सीखना एक प्रक्रिया है, किन्तु क्या सीखा गया है इस ओर भी हमें ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि बाहरी और निरीक्षण किये जा सकने वाली घटना से ही हम आन्तरिक क्रिया क्या हो रही है, उसको समझते हैं। यह व्यावहारिक परिवर्तन सीखने को इंगित करते हैं और यदि यह नहीं होते हैं तो हम प्रश्न पूछ सकते हैं कि क्या सीखना हुआ भी है। ट्रेवर्स सीखने के अन्दरूनी एवं बाहरी कार्य का संक्षेपीकरण करते हैं और उसकी परिभाषा देते हैं कि यह एक प्रक्रिया है जो व्यवहार में रूपान्तर लाती है। वह इस बात पर जोर देते हैं कि इस प्रकार के व्यावहारिक परिवर्तन सीखने से ही निर्धारित होने चाहिए, न कि प्रौढ़ता, थकावट या नशीली वस्तुओं के सेवन से। इस प्रकार ट्रेवर्स सीखने के सम्बन्ध में जो एक भ्रान्ति-सी है कि सीखना एक प्रक्रिया है या एक परिणाम है, इसको दूर करने की चेष्टा करते हैं।

गेने<sup>4</sup> की सीखने की परिभाषा है—“मानव संस्कार अथवा क्षमता में परिवर्तन, जो धारण किया जा सकता है तथा जो केवल वृद्धि की प्रक्रिया के ऊपर ही आरोप्य नहीं है।” यह परिभाषा अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं की ही भाँति है, किन्तु इस परिभाषा पर ध्यान देने में हमें सीखने के सम्बन्ध में निम्नलिखित चार बातें स्पष्ट हो जाती हैं :

(1) **सीखना व्यवहार में परिवर्तन है<sup>5</sup>**—हमारा बहुत कुछ व्यवहार आदतजन्य होता है जहाँ हम जो कुछ पूर्व में सीख लिया गया है तथा अर्जित कर लिया गया है उसे दोहराते रहते हैं, किन्तु ‘सीखने’ शब्द का प्रयोग हम विशिष्ट अर्थ में करते हैं। यह ज्ञान अथवा काल के अर्जन से सम्बन्धित है तथा मानव व्यवहार से भी। जब हम सीखने से मानव-क्रिया का संकेत देते हैं तो इसमें व्यवहार में परिवर्तन निहित होता है। इस प्रकार यह कहना कि हम सदैव सीखते रहते हैं, ज्ञान अथवा कला को अर्जित करने के सन्दर्भ में समझा जा सकता है जबकि सीखने को हम एक मानव क्रिया के रूप में उस समय ही समझ सकते हैं जबकि इसे व्यवहार में परिवर्तन लाने वाला समझें।

(2) **मानव संस्कार अथवा क्षमता में परिवर्तन<sup>6</sup>** में दो मुख्य बातें हमारे सम्मुख आती हैं। पहली तो यह कि व्यावहारिक परिवर्तन सम्भाव्य हो सकते हैं, न कि वास्तविक। दूसरे शब्दों में, सीखने वाला सीखने के परिणामस्वरूप अपने व्यवहार को कभी भविष्य में बदल सकता है, चाहे वर्तमान में कोई भी नाटकीय परिवर्तन न हुए हों। बहुत कुछ हमारे शिक्षा के आदर्श सम्भाव्य परिवर्तनों पर ही केन्द्रित हैं। दूसरी बात यह है कि परिवर्तन चाहे तो इस पर प्रभाव डाल सकता

1. पवलव का सिद्धान्त अध्याय 15 में देखें।

2. Travers, John F. : *Learning Analysis and Application*, N. Y., Mckay, 1965, p. 7.

3. Allport, Gordon W. : *Pattern Growth in Personality*, N. Y., Holt, 1961.

4. Gagne. 5. Learning is change in behaviour. 6. Change in human disposition and capability.

है कि एक व्यक्ति क्या कर सकता है अथवा क्या करने की उसकी इच्छा है। बहुत बार शिक्षक सीखने को क्षमता के रूप में ही देखते हैं। सीखने को कुछ करने के रुझान के रूप में भी देखना आवश्यक है।

(3) व्यवहार में, क्षमता में, रुझान में अनेक परिवर्तन होते हैं, जो देर तक नहीं रहते। एक प्रार्थी साक्षात्कार के समय तो अपने को बहुत योग्य प्रदर्शित करता है, किन्तु जब नौकरी पर कार्य करने लगता है तो बहुत ही अप्रभावशाली होता है। एक व्यक्ति जैसे तो बहुत शान्त रहता है, परेशान करने पर बहुत बोलने लगता है। इस कारण ही हम कह सकते हैं कि सीखने में कुछ काल तक क्षमता या रुझान को रोकना निहित होना चाहिए।

(4) अन्त में, गेने की परिभाषा यह स्पष्ट कर देती है कि 'सीखने' शब्द का प्रयोग उन क्षमताओं तथा संस्कारों में परिवर्तन के लिए उपयोग नहीं होता जो परिपक्वता के कारण होते हैं।

कोई भी सीखने की सामान्य परिभाषा, जैसी ऊपर दी हुई है, शिक्षक के दृष्टिकोण से असन्तोषजनक नहीं होती है। यह जहाँ तक जाती है ठीक है, किन्तु इसकी सामान्यता इसे शिक्षक के जो मुख्य मतलब की बातें हैं जो विशिष्ट प्रकार के सीखने से सम्बन्धित हैं, उससे इसे दूर कर देती हैं; जैसे—पढ़ना सीखना, गिनना सीखना, अँग्रेजी बोलना सीखना, मानव इतिहास सीखना इत्यादि। इसके साथ ही साथ यह सीखने में किसी संस्कार अथवा योग्यता को धारण करने के विचार पर बल देती है। बिना पर्याप्त वजन इस तथ्य को दिए हुए कि वह निष्पादन जो सीखने के प्रमाण को प्रदर्शित करते हैं, विभिन्न अवसरों पर एक-दूसरे से बहुत विचारित हो सकते हैं।

### सीखने की प्रक्रिया<sup>1</sup>

सीखने की प्रक्रिया में कोई अनुप्रेरण<sup>2</sup> या अन्तर्नोद<sup>3</sup>, एक आकर्षित करने वाला लक्ष्य अथवा लक्ष्य को प्राप्त करने में रुकावट शामिल रहते हैं। हम एक उदाहरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकते हैं। एक बालक भूखा है। भूख यहाँ अन्तर्नोद है। वह अलमारी के पास जाता है जिसमें उसकी माता ने मिठाई रखी है। वह उसे खोलने की चेष्टा करता है, किन्तु चटखनी ऊँचाई पर लगी होती है और वह उस तक पहुँच नहीं पाता। वह इधर-उधर देखता है। एक स्टूल उसे दिखाई पड़ता है। वह उसे लेता है, चटखनी खोलता है और मिठाई निकाल लेता है। इस उदाहरण में मिठाई प्राप्त करने का लक्ष्य स्पष्ट है। अब यदि वह प्रारम्भ में ही बिना कठिनाई के अलमारी खोलने में सफल हो जाता है तो उसकी क्रिया वहीं समाप्त हो जाती है और कोई नवीन सीखना नहीं होता है, किन्तु यहाँ एक रुकावट है। चटखनी ऊँची है। यह रुकावट उसमें तनाव उत्पन्न कर देती है। वह बेचैनी महसूस करता है और एक हल खोज करता है। यह हल उसे स्टूल पर चढ़कर चटखनी खोलने के रूप में मिल जाता है। अतएव उसका सीखना हो गया। इस अनुभव से उसने दो प्रकार से सीखा : (1) उसने प्रस्तुत समस्या को हल करना सीखा, तथा (2) उसने एक विधि सीख ली जिसका प्रयोग वह भविष्य में ऐसी समस्याओं को सुलझाने में कर सकेगा। यहाँ यह भी याद रखना चाहिए कि सीखना प्रत्यक्ष रूप से दर्शनीय नहीं होता वरन् इसका अनुमान निष्पादन से लगाया जाता है। हम यह देख कर एक व्यक्ति के सीखने का अनुमान लगा सकते हैं कि वह अब कुछ कर सकता है जो वह पहले नहीं कर सकता था, किन्तु यह भी ध्यान देने की बात है कि सीखना या ज्ञान का अर्जन करना जिससे तात्पर्य है योग्यता प्राप्त करना और निष्पादन जिससे तात्पर्य है योग्यता को किसी कृत्य के रूप में प्रदर्शित करना, इन दोनों में विभेद है। आप यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं कि एक कम्प्यूटर किस प्रकार कार्य करता है, किन्तु इसको परिचालित करने में सफल ही हो जायें ऐसा नहीं है। हम "व्यवहारिक प्रवृत्ति"<sup>4</sup> शब्दावली का प्रयोग सीखने और निष्पादन में विभेद के लिए कर सकते हैं। व्यवहार में आपेक्षिक रूप से स्थायी परिवर्तन निष्पादन में परिवर्तन का संकेत देता है।

हम सीखने की परिभाषा ज्ञानात्मक विकास के रूप में भी दे सकते हैं। संज्ञानी<sup>1</sup> कहते हैं कि सीखना एक परिवर्तन है यह संज्ञानात्मक संरचनाओं का पुनर्संगठन है जिसमें निहित है ज्ञान का अर्जन और नवीन ज्ञान का रूपांतरण है। इस रूप में देखने में सीखना ज्ञान, कौशल अभिवृत्तियों तथा मूल्यों में ऐसा परिवर्तन है जो अनुभव द्वारा लाया जाता है।

## सीखना और प्रौढ़ता<sup>2</sup>

हम पहले बता चुके हैं कि 'प्रौढ़ता' और 'सीखना'—दोनों मिलकर व्यक्ति के विकास में सहायता पहुँचाते हैं। वे एक-दूसरे से इतने अधिक सम्बन्धित और मिलेजुले होते हैं कि उन्हें अलग-अलग करके देखना अत्यन्त कठिन है, किन्तु फिर भी व्यावहारिक दृष्टि से उनका मूल्यांकन करने के लिए हमें उनका अलग-अलग आकलन करना चाहिए।

'प्रौढ़ता' व्यक्ति की वह स्वाभाविक अभिवृद्धि है जो बिना किन्हीं विशिष्ट परिस्थितियों, जैसे—शिक्षा एवं अभ्यास आदि के ही, अनवरत रूप से चलती रहती है। उदाहरण के लिए, सभी बालक एक निश्चित उम्र पर पैरों चलना, बोलना तथा अन्य ऐसे कार्य करना सीखते हैं। विभिन्न बालकों का वातावरण एवं परिस्थितियाँ चाहे बिल्कुल भिन्न हों, फिर भी उनमें यह अभिवृद्धि अवश्य ही होती है इसमें विपरीत सीखने की क्रिया में वातावरण द्वारा प्रदान किए हुए उत्तेजक व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं। बालक अपने अनुभवों के आधार पर एवं अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही सीखता है। इसमें अभ्यास और शिक्षा—दोनों ही सम्मिलित रहते हैं।

मैक ग्रो<sup>3</sup> एवं उनके साथियों ने जुड़वाँ बालकों के अपने अध्ययन के आधार पर सिद्ध किया कि "बालक की साधारण अभिवृद्धि के लिए जिन कार्यों की आवश्यकता होती है, उन पर बार-बार जोर देना, उनका अभ्यास करना अधिक उपयोगी नहीं होता।"

स्ट्रेयर<sup>4</sup> ने दो समान जुड़वाँ बालकों T और C को शीघ्र दिए जाने वाले प्रशिक्षण से देर में दिए जाने वाले शाब्दिक प्रशिक्षण की तुलना की। 28 दिन में C जुड़वाँ बालक ने उतने शब्द-भण्डार को सीख लिया जितना T, 35 दिनों में, C से छोटी आयु पर दिए गए शिक्षण द्वारा सीख सका। परन्तु परीक्षात्मक अवधि के अन्त में T जुड़वाँ बालक का, जिसकी शिक्षा C से पाँच सप्ताह पहले आरम्भ हुई थी, शब्द-भण्डार, उच्चारण और वाक्य-योजना दूसरे से श्रेष्ठ थी; किन्तु तीन माह के उपरान्त उसकी श्रेष्ठता समानता में परिवर्तित हो गई। यह सीखने की प्रक्रिया अन्य कार्यों, जैसे—खिसकना, चलना आदि में भी इसी प्रकार होती है।

विशिष्ट प्रशिक्षण और अभ्यास उन कार्यों में बहुत अधिक लाभदायक सिद्ध होता है, जिनका सम्बन्ध मनुष्य के सामान्य विकास और अभिवृद्धि से नहीं होता; जैसे—तैरना, पहाड़ों पर चढ़ना, घुड़सवारी, स्केटिंग आदि। मैक-ग्रो महोदय ने दो समान यमजों का अध्ययन किया, उनमें से एक को जबकि यह 350 दिन का था, रौलर स्कट्स की शिक्षा देना प्रारम्भ किया। वह प्रशिक्षण लगभग उसकी दो वर्ष की आयु तक चलता रहा, उस समय वह 694 दिन का था। उसके शारीरिक गठन में उसी प्रकार के प्रारम्भिक लक्षण पाए गए, जो व्यवसायी 'स्केटर' में होते हैं। इन परिणामों से सिद्ध हुआ कि किसी भी कार्य में विशिष्ट कौशल प्राप्त करने के लिए तद्विषयक प्रशिक्षण अत्यन्त प्रारम्भ में देना चाहिए अन्यथा बहुत समय उपरान्त इन दिशाओं में यह व्यक्ति उस कार्य में प्रवीणता प्राप्त कर सकेगा। सीखने की प्रक्रिया अभिवृद्धि से स्वतन्त्र नहीं रहती, उसका आधार तो बालक की अभिवृद्धि के स्तर पर ही निर्मित होना चाहिए। अभ्यास जब अभिवृद्धि के स्तर को ध्यान में रखकर दिया जाता है तो लाभदायक होता है।

उपर्युक्त विवेचन तथा प्रयोगात्मक अध्ययनों के निष्कर्षों के आधार पर हम चार अन्तिम परिणामों पर आते हैं—

1. परिपक्वता एक सत्य है।
2. परिपक्वता सीखने की गति पर प्रभाव डालती है।
3. किसी क्रिया में अभ्यास, जिसका परिपक्वता स्तर नहीं प्राप्त हुआ है, प्रभावशाली नहीं होगा।
4. यह अत्यन्त आवश्यक है कि सब सीखने की क्रियाओं में परिपक्वता के स्तर को ध्यान में

रखा जाय।

### सीखना तथा चिन्तन<sup>1</sup>

सीखना तथा चिन्तन में भी अन्तर है। चिन्तन द्वारा सीखना हो सकता है, किन्तु यह वही बात नहीं है जैसे सीखना। वास्तव में सीखने की तुलना में चिन्तन व्यवहार अथवा निष्पादन<sup>2</sup> की भाँति है। व्यवहार अथवा निष्पादन बाहरी है तथा सीखने के निरीक्षण किये जाने वाले रूप हैं, जबकि चिन्तन आन्तरिक है। फिर भी बाहरी व्यवहार की भाँति चिन्तन जो पहले कौशल सीख लिए गये हैं उसका सक्रिय उपयोग करता है। बहुधा ऐसा एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता है जैसे जब हम किसी स्थान पर पहुँचने के लिए पैदल चलते या कोई गणित का सवाल करते हैं तो हम चिन्तन का प्रयोग बाहरी क्रिया करने के लिए ही करते हैं, किन्तु कभी-कभी हम विशिष्ट कौशल का प्रयोग जैसे टेनिस खेलना या गणित पहेली हल करना केवल उस क्रिया के लिए ही करते हैं।

### सीखना तथा व्यवहार<sup>3</sup>

सीखना और व्यवहार भी एक से नहीं हैं। जब हम कोई व्यवहार नहीं करते तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उसके बारे में कुछ जानते नहीं। इसी भाँति जब कोई व्यवहार, जो हमने पूर्व में किया है, लुप्त हो जाता है या छोड़ दिया जाता है तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह भुला दिया गया अथवा उस व्यवहार को करने की हमारी योग्यता समाप्त हो गई।

अन्त में, हम कह सकते हैं कि सब प्रकार का सीखना, वातावरण द्वारा क्या प्रस्तुत किया जाता है, उस पर निर्भर होता है। हम खोज द्वारा सीखते हैं, किन्तु छोटे-छोटे उन कुदानों में आगे बढ़ते हैं जो कि उस स्थान से प्रारम्भ होती हैं जो हमारा परिचित होता है। तात्पर्य यह है कि जो कुछ ज्ञात है उसके ही आगे अज्ञात की ओर धीरे-धीरे बढ़ते हैं और इस प्रकार नई सूझ तथा अन्तर्दृष्टि हममें जाग्रत होती रहती है जिसकी नींव हमारे पूर्व ज्ञान पर ही बनी होती है। यह सम्भव नहीं होता कि हम कुछ ऐसी खोज करें जो कि हमारे अनुभव से बिलकुल बाहर हो। जैसे जिस व्यक्ति को रसायनशास्त्र का कुछ भी ज्ञान नहीं होता वह पानी के दो अवयवों की खोज कर ले, ऐसा नहीं होगा। इसके विपरीत जब हम कुछ विशेष घटनाओं को देखते हैं तो यह सम्भावना रहती है कि हम उनके बारे में कुछ न कुछ सीख लें। यद्यपि कोई सीधा प्रयास उसको सीखने के लिए या सिखाने के लिए नहीं किया गया होता है। केवल घटनाओं का प्रत्यक्ष करना ही इसको सम्भव बना देता है कि कुछ सीखना हो गया है। जैसे टेलीविजन पर कार्यक्रम केवल देखकर ही हम जनसंख्या को सीमित रखने के सम्बन्ध में सीख जाते हैं, किन्तु सीखना सबसे अधिक तथा आवश्यक रूप से उस समय होता है जबकि पूर्ण चेष्टा जानबूझकर सीखने की, की जाती है तथा जब सीखने में रुचि होती है।

### सीखने के उद्देश्य<sup>4</sup>

सीखने के उद्देश्यों को मोटेतौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :  
(अ) ज्ञानोपार्जन और (ब) कला-अर्जन। ज्ञानोपार्जन से तात्पर्य मानसिक एवं संवेगात्मक संपरिवर्तन

1. Learning and Thinking. 2. Performance. 3. Learning and behaviour. 4. The Goals in Learning.